Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

SOCIAL REFORMERS IN INDIA

February -2023

ISSUE No- (CCCXCVII) 397-B

Chief Editor

Prof. Virag S. Gawande

Director

Aadhar Social

Research & Development

Training Institute Amravati

Editor

Dr.Manashi Gogoi Borgohain

Head, Department of Education

Nandalal Borgohain City College,

Dibrugarh, Assam

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

21	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचा आधुनिक भारताच्या जडणघडणतील राजकीय योगदानाचा अभ्यास प्रा. बालासाहेब शिवाजी	81
22	समाजसुधारक- लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक सा.प्रा.पल्लवी विनायक तांबोळी-देशमुख, सा.प्रा.रोहिणी टेळे	86
23	२१ वी सदी में संत कबीर साहित्य की प्रासंगिकता डॉ.विरनाथ पांडुरंग हुमनाबादे	89
24	भक्तिकालीन निर्गुण कवियों का हिंदी साहित्य में योगदान प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले	92
25	महिलाओं के खिलाफ बढ़ते हुये अपराधों की उत्पति राम प्रकाश दीक्षित	95
26	भक्ति आन्दोलन का भारतीय समाज पर प्रभाव डॉ. आशीष कुमार	99
27	गुरू नानक देव जी — एक परिचय डॉ. हेत राम	107
28	ग्रामीण महिलाओं की समस्याएं और समाधान डॉ. विशाखा , श्री देवऋषि भलावी	117

B.Aadhar Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal

Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, - (CCCXCVII) 397-B

ISSN : 2278-9308 February 2023,

भक्तिकालीन निर्गुण कवियों का हिंदी साहित्य में योगदान

प्रा.डॉ. अमोल रमेश इंगले

हिंदी विभागाध्यक्ष शिवनेरी महाविद्यालय शिरूर अनंतपाल, जिला. लातूर. महाराष्ट्र- 413544।
दूरभाषक्रमांक -- 9423737256 ,ईमेल-amoli6080@gmail.com

हिंदी साहित्य के इतिहास में "भक्तिकाल" का एक अलग ही स्थान रहा है| आदिकाल के बाद हिंदी में भक्ति साहित्य का उदय हुआ। इस काल को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। साथ ही इस युग को स्वर्ण काल, स्वर्ण युग, भक्तिकाल, लोकजागरण काल भी कहा जाता है। इसका समयावधि 1375 से 1700 तक माना जाता। भक्तिकालीन कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से केवल ईश्वर की भक्ति ही नहीं की तो अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज का पथ प्रदर्शन भी किया है। इस भक्तिकालीन काव्य को उसके वर्ण्य विषय के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया गया है। निर्गुण भक्ति काव्य तथा सगुण भक्ति काव्य।

निर्गुण काव्य धारा के कवियों को दो भागों में विभाजित किया गया है।1) ज्ञानाश्रयी शाखा या संत काव्यधारा 2) प्रेमाश्रयी शाखा या सूफी काव्यधारा। निर्गुण काव्य के कवियों ने ईश्वर के निर्गुण निराकार रूप की आराधना की है। जीस ब्रह्म का निरूपण किसी विशेषण या लक्षण के द्वारा न किया जा सके वह निर्गुण है। प्रकृति में सत्व, रज और तम यह तीन गुण है किंतु निर्गुण ईश्वर इन तीनों प्राकृतिक गुणों से रहित है जैसे-

" निर्गुण सत्व रज स्तमांसिगुणाःतैःवर्जितः "1

अर्थात सत्व रज और तम गुणों से अलग निर्गुण है। आज हम जिस दलित साहित्य को देखते हैं उसकी शुरुआत आदिकालीन बौद्ध और सिद्धों से होते हुए भक्ति कालीन निर्गुण संत साहित्य में दिखाई देती है। निर्गुण वादी कवियों ने सबसे पहले सामाजिक व्यवस्था को ललकारा। इतना ही नहीं तो उन्होंने वर्णवाद, जातिवाद, पाखंड विरोध, हिंदू-मुस्लिम एकता आदि के विरोध में आवाज उठाई। अर्थात निर्गुण वादी कवियों की काव्यधारा जन-जन में जीवन को पवित्र तथा सुधारने में लगी। इस संदर्भ में डॉ. श्यामसुंदर दास का मत है कि " संत कवियों मे अपनी निर्गुण भक्ति द्वारा जनता के ह्रदय में अपूर्व आशा उत्पन्न की। उसे कुछ अधिक समय तक विपत्ति की अथाह जल राशि के ऊपर बने रहने की उत्तेजना दी। संत कवियों ने समाज में फैली हुए विभिन्न आडंबरों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों आदि का पर्दाफाश किया और जनता के सन्मे एवं अच्छे मार्ग की ओर अग्रसर किया।"

पूरे देश भर में कबीर, रविदास, दादू दयाल, नानक सदना, मलूकदास, पलटूदास, सुंदरदास, पीपा आदि संत कवियों ने वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, पाखंडवाद, ब्राह्मणवाद, का विरोध और विश्व 'मानवतावाद' की स्थापना करने का सफल प्रयास किया है। उनकी क्रांतिकारी वाणी से सामाजिक व्यवस्था के प्रति लेखन हुआ है। सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक क्षेत्रों में कुछ विशिष्ट लोगों का ही वर्चस्व बना हुआ था। यह बलवान लोग गरीब, पिछड़े, दलित, आदिवासी, स्त्री आदि को अपना शिकार बनाते थे। ऐसी विषम समाज व्यवस्था में व्याप्त भेदभाव को मिटाने के लिए तथा समता स्थापित करने हेतु इन निर्गुणवादी कवियों ने अपना भरकस योगदान दिया है। इन संत कवियों ने मानव जीवन पर जोर देते हुए समाज में व्याप्त जाति प्रथा, छुआछूत, ऊंच-नीच, वर्ण भेद अंधश्रद्धा, धार्मिक ढोंग, स्त्री शोषण को दूर करने के लिए अपनी वाणी और विचारों से काफी प्रयास किए हैं।

कबीर

कबीर निर्गुणवादी भक्त, सत्यवादी, प्रेम के समर्थक, बाह्याडंबर विरोधी, क्रांतिकारी कवि, सुधारक के रूप में हमारे सामने आते हैं। कबीर के समय में समाज वर्ण और जातियों में विभक्त था। छुआछूत का बोलबाला था। समाज में धार्मिक भेदभाव, अंधश्रद्धा, रूढी परंपरा आदि बुराइयां चरम सीमा पर थी। ऐसे में कबीर ने सिंह गर्जना करते हुए ब्राह्मणवाद के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद कर दी।–

" ऊंचे कुल क्या जनमिया, जे करनी उँच न होई।
सोवन कलस सुरैभया, साधूनिहया सोई।।2

कबीरदास जी कहते हैं कि, उँचे कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता उसके कर्म, व्यवहार और आचरण उँचे होने चाहिए नहीं तो ऐसी बात हो गई की सोने के कलश में जहर / शराब भरा हुआ होने जैसी बात होगी। जिससे जिसकी चारों ओर निंदा ही होगी या वह अपनी महत्ता खो देगा या वह बुराई का पात्र बन जाता है। अर्थात मनुष्य की

पहचान उसके घर खानदान से, उसके वर्ण जाति से, उसके धनवान और निर्धन होने से नहीं बल्कि उसके अच्छे कर्म व्यवहार और आचरण से होती है।

" साईं इतना दीजिए, जामेकुटुमसमाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।।3

कबीरदास जी कहते हैं कि, हे प्रभु मुझे धन और दौलत ज्यादा नहीं चाहिए मुझे उतनी ही धन दौलत चाहिए जितनी मेरे परिवार के पालन के लिए जरूरी है। जिस संपत्ति से मैं और मेरा परिवार भूखा ना रहे और मेरे घर पर आए साधु संत भूखा न लौट जाए। इस दोहे में कबीर जी नैतिक मूल्यों की बात करते हुए स्वस्थ समाज निर्माण की कोशिश करते हैं। समाज में बढ़ते भ्रष्टाचार, स्वार्थ और संग्रह व्रत्ती जैसे अनैतिक मूल्यों ने अपनी पकड़ मजबूत बनाई है। मनुष्य भौतिकवाद के कारण धन के पीछे भाग रहा है, संचित धन के कारण भोग विलास में जीवन जी रहा है। इससे बचना है तो संतों की वाणी को अपने जीवन में उतारना होगा। मानवीय मूल्यों के पतन से हमें बचना है तो कबीर के विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

रैदास

निर्गुण काव्य परंपरा में कवि रैदास का नाम उल्लेखनीय है। रैदास जी ने भी समानता और मानवता का पक्ष लेते हुए सामाजिक विषमता, वर्णवादी व्यवस्था, जाति प्रथा के विरोध में आक्रोश ही प्रकट नहीं किया बल्कि मानवता का संदेश देते हुए सद्भावना और सदाचार जैसे शाश्वत मूल्यों का प्रचार-प्रसार भी किया है।

" रविदास जन्म की कार नै,होत न कोउ नीच।
नर कूं नीच करिडारी है, ओछे करम की कीच।"4

रविदास जी का कहना है कि, मात्र जन्म से कोई नीच या छोटा नहीं होता बल्कि उसका कर्म ही उसे नीच बनाता है। इसीलिए मनुष्य को सत्य के मार्ग पर चलते हुए अच्छे कर्म करते रहने चाहिए।वे कर्म को ही धर्म मानते हैं। इसीलिए सभी मनुष्य मात्र की भलाई के लिए किया जाने वाला कर्म ही मनुष्य को ऊंचा बना देता है। मनुष्य ने हमेशा कर्मों पर ही ध्यान देना चाहिए। कर्म हमेशा ऊँचे होने चाहिए। रविदास जी ने जातिवाद से उठकर अपना कर्म किया है।

संत दादू

संत काव्य परंपरा में दादू के नाम से दादू पंथ चल पड़ा। दादू अत्यधिक दयालु व्यक्ति थे इस कारण इनका नाम दादू दयाल पड़ा। इनको प्रेम, प्रीति और स्नेह के बिना सारा संसार सार हिन लगता है। वे हमेशा सत्य की राह पर चलते थे, झूठों के लिए यह राह आसान नहीं है ।इसीलिए उन्होंने सत्य की राह पर चलने का आह्वान किया है जिससे मनुष्य का जीवन सफल हो जाएगा। दादू ने हिंदू,- मुस्लिम एकता पर बल देते हुए 'मानवतावाद' का प्रसार किया है। उनका मानना है कि, धर्म भेद को मिटाकर एकमात्र 'मानव धर्म' की प्रतिष्ठा हो।

" सब हम देख्यासोधि कर दूजा नहीं आन
सब घट एकै आत्मा क्या हिंदू मुसलमान ।।"5

तत्कालीन समाज में व्याप्त जाति- पाती, भेदभाव, हिंदू-मुस्लिम भावना, संप्रदायवाद आदि सामाजिक प्रवृत्तियों को जड़ से उखाड़ने के लिए संतो ने भरसक प्रयास किया है। दादू ने अपनी सहज विचारधारा से समाज को नई दिशा देने का काम किया है। वे समाज में ऊंच-नीच की भावना को दूर करते हुए ब्राह्मण- शुद्र, हिंदू-मुसलमान आदि भेदभाव को मिटा कर मानवता का संदेश देते हैं। दादू की सामाजिक समरसता की भावना वर्तमान में भी प्रासंगिक है। संतों के विचार आज भी हमारे लिए प्रथ दर्शक है।

मलूकदास

महान संत कवि मलूकदास जी ने अपने दोहों के माध्यम से मानवीय मूल्यों की स्थापना की है। उन्हें जाति धर्म के नाम पर मनुष्य में भेदभाव करना कतई पसंद नहीं था।वे सभी मनुष्य मात्र को एक समान मानते हुए सबके साथ समानता का व्यवहार करते थे। इनका समूचा जीवन दया और करुणा से ओतप्रोत रहा है।

" दया धर्म हिरदै बसे, बोले अमृत बैन।
तेईउँचे जानिए, जिनके नीचे नैन ।।"6

मलूकदास जी मनुष्य को सच्चे आचरण की बात बताते हुए मनुष्य के भीतर ज्ञान की ज्योति जगमगाना चाहते हैं। इसीलिए वे मनुष्य को समस्त जड़ता को त्याग कर माननीय उदात्तता से जोड़ने की कोशिश करते हैं। वे समूचे मानव समाज को परोपकार की बात सिखाते हुए मानवीयता के पथ पर चलने के लिए कहते हैं। इनके विचारों में मानवतावाद की व्यापक भावना दृष्टिगोचर होती है।

भक्तिकालीननिर्गुणवादी संत कवियों ने अपने साहित्य में वर्णवाद, जातिभेद, पाखंडवाद, ब्राह्मणवाद आदि का खुलकर विरोध किया है। इनके साहित्य में सामाजिक मूल्यों के साथ सामाजिक चेतना भी दिखाई देती है। निर्गुणवादी संत कवि इस वर्णवादी सामाजिक विषमता के खिलाफ खड़े ही नहीं होते बल्कि इस वर्णवादी विषम व्यवस्था को तोड़कर 'मानवतावाद' की स्थापना के लिए अग्रसर है। इन सभी संत कवियों ने धर्मवाद ,जातिवाद के विरुद्ध विद्रोह का मार्ग अपनाया था।

संदर्भ ग्रंथ सूची—

1) हिंदी अभ्यास पुस्तिका -डॉ. आर.पी. शर्मा, एच. जी पब्लिकेशन, नेव दिल्ली, पृष्ठ संख्या-90।
2) समृद्ध काव्य- संपा. डॉ. संजय गड़पायले, दिव्याडिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशक, कानपुर, पृष्ठ संख्या-39।
3) संत साहित्य की आधुनिक अवधारणाएं- डॉ. सुनील कुलकर्णी, अतुल प्रकाशन, यशोदा नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण -2009, पृष्ठ संख्या -44।
4) काव्य तरंग- संपा. डॉ. बालाजी भूरे, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण -2020, पृष्ठ संख्या- 68।
5) संत साहित्य की आधुनिक अवधारणाएं- डॉ. सुनील कुलकर्णी अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण- 2009, पृष्ठ संख्या -147।
6) मलूकदास– डॉ. बलदेव बंशी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण -2006, पृष्ठ संख्या – 61।